①

BA Part III

मैथिली प्रतिष्ठा

पत्र - पाँच

मैथिली साहित्य इतिहास

प्रो० संजीत कुमार राम
(अतिथि व्याख्याता) JNU
मैथिली विभाग,
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (LNMU)

'उत्तरा' खण्डकाव्य मे सुरेन्द्र झा 'सुमन'क योगदान :-

मैथिली साहित्यक सर्वोत्तम कृतिमे सँ अन्यतम सप्तसर्गीय उत्तरा एक चरित्रप्रधान खण्डकाव्य थिक। एहि मध्य कवि पाण्डवक अज्ञातवाससँ लए समग्र महाभारतक कथाकेँ संक्षेपमे वर्णन करैत अन्तमे परीक्षितकेँ गर्भ धारण कयने उत्तराक आदर्श कर्तव्य-बोधक चित्रण कएल

अछि। एहि प्रकार उत्तराक चरित्रकेँ महिमामयी भारतीय ललनाक रूपमे अंकित करबाक चेष्टा कएल गेल अछि। एहि खण्डकाव्यहु मध्य कविक प्रख्यात पाण्डित्यपूर्ण व्यक्तित्वक अभिव्यक्ति भेल अछि। सांस्कृतिक भाषा-शैलीमे विविध विषयक 'सांगोपांग वर्णनक रूपमे। 'उत्तरा' आधुनिक रीतिक सन्तुलित कथा-वस्तु एवं मनोवैज्ञानिक चरित्र-चित्रण प्रधान खण्डकाव्य नहि थिक। उत्तराक द्वन्द्व अन्तर्द्वन्द्व ओ सहजात मानवीय वृत्तिक स्वाभाविक आलोड़नकेँ सहानुभूतिपूर्ण एवं संवेगात्मक सहृदयताक संग अंकित करबामे समर्थ नहि भेल छथि तथा एहि खण्डकाव्य समग्र कथा-विन्यासक एकर नामकरण सार्थक सिद्ध नहि भेल अछि। वस्तुतः सुमनजी चमत्कारपूर्ण वर्णन, अलंकारपूर्ण शब्द-संयोजन एवं गौरवपूर्ण सांस्कृतिक जीवन-दर्शनक कवि छथि आओर हुनक कवित्वक विशेषता 'उत्तरा' खण्डकाव्यमे सहजहि प्रतिबिम्बित भेल अछि। सुमनजी गीत-नृत्यक महिमाक रोचक वर्णन प्रस्तुत करैत छथि:-

॥ शारदा स्वयं वीणावाहिनी, श्यामा नर्तकी
कमलासन लीला-कमल हस्तयुता वर्तिका॥

Sanjeet Kumar
२५।०३।२०